

राजस्थान कर बोर्ड, अजमेर

1. अपील संख्या 185/2011/अलवर
2. अपील संख्या 186/2011/अलवर
3. अपील संख्या 187/2011/अलवर
4. अपील संख्या 188/2011/अलवर
5. अपील संख्या 189/2011/अलवर

मैसर्स जी.एस.फार्माब्यूटर्स प्रा.लि., बहरोड़ अलवर।

.....अपीलार्थी.

बनाम

सहायक आयुक्त,
वृत्त प्रतिकरापवंचन, जोन प्रथम, जयपुर।

.....प्रत्यर्थी

खण्डपीठ

श्री खेमराज, अध्यक्ष
श्री मदन लाल, सदस्य

उपस्थित : :

श्री विवेक सिंघल, अभिभाषक।

.....अपीलार्थी की ओर से.

श्री एन.के.बैद,

उप-राजकीय अभिभाषक।

.....प्रत्यर्थी की ओर से.

निर्णय दिनांक : २२.05.2017

निर्णय

1. अपीलार्थी व्यवहारी द्वारा सहायक आयुक्त, प्रतिकरापवंचन जोन प्रथम, जयपुर (जिसे आगे "सशक्त अधिकारी" कहा जायेगा) द्वारा पारित आदेशों के विरुद्ध अपीलें उपायुक्त (अपील्स) द्वितीय, वाणिज्यिक कर विभाग, जयपुर के समक्ष प्रस्तुत की गई। किन्तु राज्य सरकार की अधिसूचना दिनांक 01.06.2010 द्वारा केन्द्रीय विक्रय कर अधिनियम, 1956 (जिसे आगे "केन्द्रीय अधिनियम" कहा जायेगा) की धारा 6ए(2) के संबंध में तथा उप धारा (3) के संबंध में उक्त अपीलें राज्य की सर्वोच्च अपील प्राधिकारी राजस्थान कर बोर्ड के समक्ष सुनवाई हेतु नियत किये जाने के प्रावधान किये जाने के फलस्वरूप यह अपीलें उपायुक्त (अपील्स) की आदेशिका दिनांक 18.01.2011 के द्वारा राजस्थान कर बोर्ड को प्रेषित की गई है। अतः प्रकरणों में उभयपक्ष की सुनवाई के पश्चात गुणावगुण पर निस्तारण किया जा रहा है।

अपील सं.	क.नि.वर्ष	आदेश दिनांक	कर	ब्याज	शास्ति	कुल मांग राशि
185/11	2001-02	21.02.2004	92,64,525	43,08,007	1,85,29,050	3,21,01,582
186/11	2002-03	28.02.2004	1,72,51,702	43,99,183	2,44,03,108	4,60,53,993
187/11	2003-04	21.02.2004	81,31,968	7,31,877	1,62,63,936	2,51,27,781
188/11	2000-01	31.12.2005	13,53,210	9,60,779	27,06,420	50,20,409
189/11	2003-04	02.01.2008	1,51,35,360	49,44,649	1,68,18,018	3,68,98,027

2. इन सभी प्रकरणों के तथ्य एवं विवादित बिन्दु समान होने के कारण इनको एक ही आदेश से निर्णित किया जा रहा है, निर्णय की प्रति प्रत्येक पत्रावली पर पृथक-पृथक रखी जा रही है।

3. प्रकरणों के तथ्य संक्षेप में इस प्रकार हैं कि अपीलार्थी व्यवहारी राजस्थान के अलवर जिले में बहरोड़ में पंजीकृत औद्योगिक इकाई है (जिसको आगे से "अपीलार्थी GSPL" कहा जायेगा) एवं इसके टिन नं0 08690700028 तथा केन्द्रीय विक्रय कर अधिनियम के तहत पंजीकरण संख्या 0206/05029 है अपीलार्थी फर्म का पंजीकृत मुख्यालय मैसर्स जी.एस. फार्माब्यूटर्स प्रा0लि0 79(FF) अर्जुननगर नई दिल्ली मे है (जिसको आगे से "GSPL मुख्यालय" कहा जायेगा) जिनका पंजीयन संख्या एलसी/100/7380237234/0101 है। GSPL मुख्यालय की अन्य ब्रांचें अलग-अलग राज्यों में स्थानीय/केन्द्रीय बिक्री कर अधिनियम के तहत पंजीकृत है यथा डीएनओ-59A-17-5/2A, सुनिता निवास फनटाईम रोड, टीचर्स कॉलोनी विजयवाडा आंध्रप्रदेश, C&F मैसर्स, सेठी एजेन्सी हाउस नं0 6 सेवा नगर फुटली घर





जोन नं० 5, गली नं० 3, अमृतसर, सीएसटी नं० 16230915-12.02.2001, सीएण्डएफ मैसर्स मुरक्का क्लीयरिंग एजेन्ट्स प्रा०लि०, अरिहन्त कॉमर्शियल कम्पाउण्ड बिल्डींग 25 भिवण्डी, इत्यादि। मैसर्स जीएस फार्माब्यूटर प्रा०लि० के मुख्यालय नई दिल्ली (GSPL मुख्यालय) तथा मैसर्स विन मेडीकेयर लि०, 58 नेहरू पैलेस न्यू देहली (जिसको आगे से "WML" कहा जायेगा) के मध्य कतिपय दवाईयों की बिक्री के संबंध में अनुबन्ध हुआ था। मुख्यालय दिल्ली स्थित कम्पनी ने उक्त अनुबन्ध के तहत क्रेता को दवाई सप्लाई करने के क्रम में अपने राजस्थान के बहरोड स्थित औद्योगिक इकाई से उक्त दवाईयों का निर्माण करवाया। अपीलार्थी GSPL बहरोड इकाई ने माल का निर्माण कर GSPL मुख्यालय के निर्देशानुसार माल मुख्यालय व मुख्यालय के निर्देशानुसार अन्य शाखाओं को स्थानान्तरित किया एवं तत्पश्चात GSPL मुख्यालय से अथवा सम्बन्धित शाखा से क्रेता WML को उक्त माल विक्रय किया जिसके लिये जारी इन्वॉयसेस में स्थानीय कर वसूल कर जमा करवाया गया एवं संबंधित राज्य में कर निर्धारण भी सम्पूरित करवाये गये। अपीलार्थी GSPL ने माल स्थानान्तरण के संबंध में वक्त कर निर्धारण एफ प्रपत्र प्रस्तुत किये परन्तु कर निर्धारण अधिकारी ने विवादित अवधियों में मैसर्स WML के साथ विक्रय अनुबन्ध के आधार पर कथित शाखा स्थानान्तरण को अन्तर्प्रान्तीय विक्रय मानकर प्रस्तुत "एफ" प्रपत्रों को अस्वीकार करते हुए करारोपण किया एवं करवंचना हेतु शास्त्रि का आरोपण किया गया। अपीलार्थी व्यवहारी ने अपीलीय अधिकारी के समक्ष अपील प्रस्तुत की परन्तु राज्य सरकार की अधिसूचना दिनांक 01.06.2010 द्वारा केन्द्रीय अधिनियम की धारा 6ए(2) के संबंध में तथा उप धारा (3) के संबंध में उक्त अपीलें राज्य की सर्वोच्च अपील प्राधिकारी राजस्थान कर बोर्ड के समक्ष सुनवाई हेतु नियत किये जाने के प्रावधान किये जाने के फलस्वरूप यह अपीलें उपायुक्त (अपील्स) की आदेशिका दिनांक 18.01.2011 के द्वारा राजस्थान कर बोर्ड को प्रेषित की गई है।

4. उभयपक्षीय बहस सुनी गई।

5. अपीलार्थी व्यवहारी की ओर से विद्वान अभिभाषक ने कथन किया कि कर निर्धारण अधिकारी के समक्ष नियमित बहियात, समस्त बिक्रियां एवं स्टॉक ट्रांसफर की विगत प्रस्तुत कर दी गई थी, तत्पश्चात भी कर निर्धारण अधिकारी ने प्रस्तुत "एफ" फार्म को अस्वीकारते हुए करारोपण किया है, जो अनुचित एवं अविधिक है। उन्होंने तर्क दिया कि उनका संव्यवहार उनके मुख्यालय के साथ ही था किसी अन्य के साथ नहीं था। संव्यवहार के सामान्य खर्च यथा भाडा, बीमा आदि GSPL मुख्यालय द्वारा चुकाए गये है। कर्मचारियों के व्यय व अन्य खर्च भी उसके द्वारा वहन किये जाते है। समस्त डिपो स्थानान्तरण के चालान/इन्वॉयस व बिल्टी मुख्यालय अथवा उसके द्वारा नामित शाखा के नाम से बनी है एवं संबंधित राज्यों में स्थानीय बिक्री कर अधिनियम के तहत कर निर्धारण भी सम्पूरित किये गये है। अपने तर्कों के समर्थन में निम्न निर्णयों का उल्लेख करते हुए प्रस्तुत अपीलों को स्वीकार करने का निवेदन किया।

1. IN THE SUPREME COURT OF INDIA] STATE OF TAMIL NADU VS THE CEMENT DISTRIBUTORS Dated March 14, 1975 36 STC 389
2. [IN THE SUPREME COURT OF INDIA] KELVINATOR OF INDIA LTD. VS THE STATE OF HARYANA Dated August 23, 1973 (1973) 32 STC 629 (SC)
3. IN THE SUPREME COURT OF INDIA] BALABHAGAS HULASCHAND VS THE STATE OF ORISSA Dated December 9, 1975 (1976 37 STC 207) (SC)
4. [1980 U.P.T.C.-317] R.M. Shai, J. Sales Tax Reference No. 931 of 1978 Dated January 10, 1980 Commissioner of Sales Tax Vs Ms John Okey & Mohan Ltd.
5. [In The High court of Andhra Pradesh At Hyderabad] State of A.P. Vs Gromor Chemicals Pvt. Ltd. March 21, 1990 Vol. 79 STC page 42

6. 2016 VAT Reopporter page 261 SB Sales Tax Revision No. 298/2011 ACCT, Bhiwadi Vs Alfa Woven Labels (India) Pvt. Ltd. Dated 13.04.2016

7. State of Tamil Nadu Vs Mount Mechanical Works Pvt. Ltd. - 87 STC 260
8. Steel Authority of India Ltd. Vs State of Orissa 30 VST 334
9. 2004 STC Page 473 Ashoka Leyland Ltd. Vs State of Tamilnadu Ors.
10. 1995 STC 217 Commercial Tax Officer Vs Hindustan Copper Ltd. Raj.
11. (2011) 42 VST 416 (Mad.) Sournavina Engineers (P) Ltd. Vs State of Tamil Nadu
12. Maple Exports Pvt. Ltd and Ors. Vs Sale Tax Officer (WBTT)
13. Tata Engg. & Locomotive Co. Ltd. 26 STC 345 (S.C.)
14. Sawhney Steel & Press Works Ltd. STC 301 (S.C.)
15. Central Distillery 1999 UPTC 457 (ALD.)
16. Conromandal Paints 98 STC 82 (Andhra)

उक्त निर्णयों में माननीय न्यायालयों द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्त के अनुसार अपीलार्थी द्वारा ब्रांच/स्टॉक ट्रांसफर किया गया एवं इसके समर्थन में विधिक "एफ" प्रपत्र प्रस्तुत किये गये। जिनको किसी प्रकार से कपटपूर्ण तरीके से प्राप्त कर प्रस्तुत करना प्रमाणित नहीं किया है अतः प्रस्तुत अपीलें स्वीकार करने का अनुरोध किया गया।

6. विद्वान उपराजकीय अभिभाषक ने कर निर्धारण अधिकारी के आदेशों का समर्थन करते हुए तर्क दिया कि व्यवहारी द्वारा कि गई बिक्रियां स्टॉक/ब्रांच ट्रांसफर की परिभाषा में नहीं आती है एवं यह अन्तर्राज्यीय बिक्री है। इसके समर्थन में अपीलार्थी व्यवहारी एवं मैसर्स डब्ल्यू. एम.एल. के बीच बिक्री करार की प्रति एवं विभागीय अधिकारियों द्वारा पंजीकृत मुख्यालय दिल्ली व अन्य डिपो कार्यालय पर की गई जांच का विवरण प्रस्तुत किया है साथ ही विभिन्न न्यायालयों के निम्न उद्धरण देकर ध्यानाकर्षित किया :-

1. बंगाल इम्यूनिटी कम्पनी लि० (1955) 6 एसटीसी 446 (एस.सी.)
2. भारत हैवी इलेक्ट्रीकल्स लि० बनाम भारत सरकार(1996) 102 एसटीसी 373 (एससी)
3. टाटा आयरन एण्ड स्टील कॉरपोरेश लि० बनाम एस.आर. सरलार (1960) 11 एसटीसी 655 (एससी)
4. मैग्नीज ऑर इण्डिया लि० बनाम रिजनल असिस्टेंट कमीश्नर (1976)37 एसटीसी 489(एससी)
5. यूनियम ऑफ इण्डिया बनाम केजी खोसला एण्ड कॉरपोरेशन लि० (0979) 43 एसटीसी 497 (एससी)
6. बालाभगस हुलासचंद बनाम उडीसा राज्य 1976 एसटीसी 207 (एससी)
7. डीसी बनाम सीटीओ (1969) 23 एसटीसी 152 (एससी)
8. (1976) 38 एसटीसी 475 (एससी)?
9. आंध्रप्रदेश राज्य बनाम ग्री इण्डिया केमिकल्स प्रा०लि० (APHC) 1990 79 एसटीसी 42

इसके अलावा उन्होंने वाणिज्यिक कर विभाग के अधिकारियों द्वारा की गई जांच के निष्कर्ष का हवाला भी दिया। उपरोक्त न्यायिक निर्णयों व की गई जांच के आलोक में व्यवहारी द्वारा प्रस्तुत अपीलों को अस्वीकार करने का निवेदन किया।

7. उभयपक्षों की बहस सुनने, रिकार्ड का अवलोकन करने एवं प्रस्तुत न्यायिक दृष्टान्तों का अध्ययन किया गया।

8. प्रकरणों में अविवादित तथ्य निम्न प्रकार से है :-

अपीलार्थी व्यवहारी राजस्थान के अलवर जिले में बहरोड में पंजीकृत है एवं इसके टिन नं० 08690700028 तथा केन्द्रीय विक्रय कर अधिनियम के तहत पंजीकरण संख्या 0206/05029 है अपीलार्थी फर्म का पंजीकृत मुख्यालय मैसर्स जी.एस.फार्मब्यूटर्स प्रा०लि० 79(F) अर्जुननगर नई दिल्ली में है, जिनका पंजीयन संख्या एलसी/100/ 7380237234/0101 है। इसी प्रकार अन्य ब्रांच अलग-अलग जगहों पर पंजीकृत है यथा डीएनओ-59A-17-5/2A, सुनिता निवास फनटाईम रोड, टीचर्स कॉलोनी विजयवाडा आंध्रप्रदेश, C&F

मैसर्स सेठी एजेन्सी हाउस नं० 6 सेवा नगर फुटली घर जोन नं० 5, गली नं० 3, अमृतसर, सीएसटी नं० 16230915-12.02.2001, सीएण्डएफ मैसर्स मुरक्का क्लीयरिंग एजेन्टस प्रा०लि०, अरिहन्त कॉमर्शियल कम्पाउण्ड बिल्डींग 25 भिवण्डी, इत्यादि। अपीलार्थी मैसर्स जीएस फार्माब्यूटर प्रा०लि० के मुख्यालय नई दिल्ली तथा मैसर्स विन मेडीकेयर लि०, 58 नेहरू पैलेस न्यू देहली के मध्य कतिपय दवाईयों की बिक्री के संबंध में अनुबन्ध किया गया था। मुख्यालय दिल्ली स्थित कम्पनी ने उक्त अनुबंध के तहत क्रेता को दवाई सप्लाई करने के क्रम में अपने राजस्थान के बहरोड स्थित औद्योगिक इकाई से उक्त दवाईयों का निर्माण करवाया। अपीलार्थी **GSPL** बहरोड इकाई ने माल का निर्माण कर **GSPL** मुख्यालय के निर्देशानुसार माल मुख्यालय व मुख्यालय के निर्देशानुसार अन्य शाखाओं को स्थानान्तरित किया एवं तत्पश्चात मुख्यालय से क्रेता **WML** को उक्त माल विक्रय किया जिसके लिये जारी इन्चॉयसेस में स्थानीय कर वसूल कर जमा करवाया गया एवं संबंधित राज्य में कर निर्धारण भी सम्पूरित करवाये गये। अपीलार्थी **GSPL** ने माल स्थानान्तरण के संबंध में वक्त कर निर्धारण एफ प्रपत्र प्रस्तुत किये परन्तु कर निर्धारण अधिकारी ने विवादित अवधियों में मैसर्स **WML** के साथ विक्रय अनुबंध के आधार पर कथित शाखा स्थानान्तरण को अन्तर्प्रान्तीय विक्रय मानकर प्रस्तुत "एफ" प्रपत्रों को अस्वीकार करते हुए करारोपण किया एवं करवंचना हेतु शास्ति का आरोपण किया गया।

9. अपीलार्थी फर्म का सर्वेक्षण वाणिज्यिक कर विभाग की जांच टीम द्वारा दि. 17.07.2003 को **GSPL** मुख्यालय/कतिपय शाखाओं के व्यवसाय स्थल की जांच किये जाने पर कर निर्धारण अधिकारी ने पाया गया कि अपीलार्थी द्वारा पूर्व में किये गये विक्रय अनुबंध के क्रम में संव्यवहार किये जाने पाये गये। क्रेता **WML** के लिए उसके निर्देशानुसार कच्चा माल प्राप्त कर, विनिर्माण कर तैयार किये गये माल को शाखा अन्तरण घोषित कर व्यवहारी द्वारा करापवंचन किया गया है। अतः कपटपूर्वक मिथ्या अभिव्यक्ति से करापवंचन पाये जाने पर क्षेत्राधिकार ग्रहण किया गया। जांच अधिकारी ने पाया कि अपीलार्थी व्यवहारी दवाईयों का निर्माण कर राज्य के बाहर विक्रय करता है तथापि कतिपय संव्यवहारों को शाखा स्थानान्तरण बताया गया है। जांच अधिकारी ने यह भी पाया कि अपीलार्थी व्यवहारी द्वारा दवाईयों का विक्रय राजस्थान राज्य में 8 प्रतिशत की दर से कर एवं 15 प्रतिशत की दर से सरचार्ज वसूल कर विक्रय किया जाता है। राज्य के बाहर केन्द्रीय विक्रय पर 4 प्रतिशत की दर से कर वसूल किया जाता है अथवा स्टॉक ट्रांसफर किया जाता है। व्यवहारी फर्म को Sale Tax exemption प्राप्त है। Exemption केवल Bedtadine powder की Manufacturing पर Diversification के तहत मिला हुआ है। फर्म द्वारा मुख्यतः मोदी मंडी फार्मा के लिये ही माल का निर्माण किया जाता है। माल का निर्माण उक्त व्यवहारियों द्वारा दिये गये आदेशों के अनुसार करना पाया गया एवं निर्मित माल व्यवहारी की विभिन्न शाखाओं को प्रेषित किया जाना पाया गया तथा उन शाखाओं द्वारा उक्त व्यवहारियों को माल की डिलीवरी देते हुए बिलिंग की जाती है। व्यवहारी फर्म का सर्वेक्षण करने पर पाया कि व्यवहारी ने स्वयं द्वारा विनिर्मित माल (विशिष्ट ट्रेडमार्क की दवाईयों) राज्य के बाहर घोषित विभिन्न शाखा स्थानों यथा पटना, चेन्नई, विजयवाडा, मुम्बई, अमृतसर, साहिबाबाद, कोलकत्ता एवं नई दिल्ली को शाखा अन्तरण शीषर्क में विवादित अवधियों में शाखा अन्तरण घोषित किया है। व्यवहारी के व्यवसाय स्थल की जांच पर पाया गया कि **GSPL** एवं **WML** के मध्य बिक्री का दिनांक 01.12.2000 से 31.12.2003 की अवधि का अनुबन्ध किया गया है। इस प्रकार अपीलार्थी ने पूर्व निर्धारित अनुबंध के क्रम में बिक्री की है अतः वह अन्तर्राज्यीय व्यवसाय के क्रम में बिक्री है। कर निर्धारण अधिकारी द्वारा अभिनिर्धारित कथित विवादित संव्यवहारों में मुख्य रूप से **WML** एवं **GSPL** मुख्यालय के मध्य हुए करार का अध्ययन आवश्यक है, तदनुरूप उक्त अनुबंध का आद्योपान्त पठन निम्नानुसार है

लगातार.....5

AGREEMENT TO SELL

"THIS AGREEMENT made this 1st Day of December, 2000 between G.S.P.L. Pharmubtor Private Limited, a company incorporated under the Companies Act, 1956 and having its Registered Office at 2/28, Kalkaji Extension, New Delhi-19 (hereinafter referred to as "GSPL" which expression shall, unless repugnant to the context or meaning thereof, be deemed to include its successor) of the One part And Win-Medicare Limited, as company incorporated under the Indian Companies Act, 1956 and having its Registered Office at 1400 Hemkunt Tower, 98 Nehru Place, New Delhi - 110019 (hereinafter referred to as "WML" which expression shall, unless repugnant to the context of meaning thereof, be deemed to include its successors and assigns) of the Other Part.

WHEREAS

A. WML, for the past many years has been engaged in manufacture, marketing, sale and distribution of a range of drugs and pharmaceuticals products.

B. GSPL is manufacturing in their factory at B-172, RIICO Industrial Area, Behror, Distt. Alwar the PVPL range of preparations and other preparations (hereinafter referred to as "said Products") according to its own Standards and Specifications under GMP conditions.

C. The Parties hereto are desirous of entering into an agreement being these presents setting out the terms and conditions relating to the manufacture and sale by GSPL and purchase by WML of the said Products.

NOW THIS AGREEMENT WITNESSETH AND IT IS HEREBY MUTUALLY AGREED BY AND BETWEEN THE PARTIES HERETO AS FOLLOWS:

1. GSPL agrees to sell and WML agrees to purchase from GSPL, on a principal to principal basis, the said products manufactured by GSPL, on the terms and Conditions hereinafter appearing.
2. GSPL shall be responsible to source and procure the raw/packing material and manufacture the said products and the products manufactured shall strictly conform to GMP conditions practices and to the standards and specifications prescribed by and Government Authority under the law for the time being in force.
3. In order to ensure that the said Products are in all respects manufactured under GMP conditions and are in accordance with the standards and specifications aforesaid, GSPL shall permit WML or its authorized agents and or its representatives at all times to enter upon and inspect their factory premises and examine the quality of the said products and the raw material, ingredients and other materials used or intended to be used by GSPL, for or in relation to manufacture and packaging of the said products.
4. WML shall also be entitled to have the said products manufactured hereunder examined, inspected and tested or cause to be examined, inspected or tested for Quality Control and other standards, at laboratories or other facilities in accordance with the instructions and testing procedures to ascertain that the said products have been manufactured with the standards and specifications of the Government from time to time.
5. GSPL shall not sub-contract or delegate to any other person, firm or Company the whole or any part of the manufacture or packaging of the said products under this Agreement or any part thereof or any its rights, duties or obligations thereunder.
6. The price, quantity and the packs of the said products to be sold and supplied for time to time by GSPL and purchased by WML shall be agreed upon **between the parties hereto from time to time.**
 - (a) WML shall not be bound to accept the said products which do not conform to the standards, specifications, instructions or directions prescribed and/or given by the Government in that behalf from time to time.
 - (b) In the event of WML rejecting the said products manufactured by GSPL on account of the same not conforming to the product specifications, standards and other requirements, GSPL will have the option to either cure or rectify the defects in order to ensure that the product conform to the specifications standards or other requirements prescribed by law and to sell the same to WML.

However, if the defect/s is are not capable of being cured or rectified, GSPL shall be at liberty to re-use the rejected goods as raw material either in the manufacture of same products or in the manufacture of any other products.

7. (a) During the currency of this agreement GSPL **shall sell and WML shall purchase the said product at such prices as may be mutually agreed from time to time. (Excise duty, Sales Tax, transport, insurance costs, Octroi, and other taxes, if any, levied on delivery of products to WML, as Extra charges.)**
(b) WML shall be at liberty to sell the said products at such prices and in such manner as it may think fit. Subject to compliance of the provision of applicable law.
(c) Nothing contained in this Agreement shall be deemed to restrict the right of GSPL to manufacture any other products(s).
8. GSPL shall deliver to WML the said products within the time and at such place or places as maybe stipulated in the relevant order for the said products to be placed by WML to GSPL for time to time.
9. **The products manufactured by GSPL under this Agreement shall be delivered or caused to be delivered by GSPL to WML or to such other party or parties from the place of manufactured or such other place as may be mutually agreed.**
10. The GSPL shall be free to sell any product to any of the person or party either from its factory in Rajasthan or any of its sale depot outside the state.
11. **WML shall purchase the said products manufactured by GSPL from the available and existing stocks in the sale depot of the latter, on prices as may be mutually agreed upon at the time of delivery.** For this purpose a firm order of purchase shall be placed by WML on GSPL on GSPL WML shall effect payment for the said products sold by GSPL to WML and accepted by WML, hereunder, within such period as may be mutually agreed from time to time.
12. **GSPL shall submit to WML each month a statement in writing in respect of the said products delivered to and accepted by WML hereunder and at all times keep and maintain proper records in their books relating to all matters and transactions under arising out of this Agreement.**
13. GSPL at all time comply with all applicable laws, rules and regulations, ordinances and notifications from time to time in force, including without prejudice to the generality of the foregoing, strictly comply with the provisions of the Drugs and Cosmetics Acts, 1940, Safety Laws, the Central Excise & Salt Act 1944. Industrial law (including law relating to industrial disputes), the Import policy of the Central Government and the Rules, Regulations and notifications made or issued there under, relating to or pertaining to the due and proper performance of its duties and obligations and under this Agreement. In the event GSPL commits a breach of any of the above Laws GSPL shall indemnify and/or keep WML indemnified against all claims, demands, actions, proceedings, fines, penalties, expenses and other liabilities of whatsoever nature made or brought by any court authority against WML.
14. GSPL shall also indemnify and keep WML indemnified at all times from and against all actions, suits, proceedings, claims, demands, damages and expenses of whatsoever nature which may be lodged by third party against WML in respect of any complaint with regard to the said product or due to any non performance or non observance by GSPL of any terms and conditions of this Agreement.
15. GSPL shall be solely and exclusively liable for payment of all taxes, duties and levies including excise duty and sales tax, if any, on or in connection with the manufacture and sale of the said products by GSPL to WML in accordance with this Agreement and WML shall in no event be liable or responsible therefore.
16. Nothing herein contained shall constitute or be deemed to or intended to constitute GSPL as an agent of WML or WML as an agent of GSPL. It is hereby expressly agreed and declared that neither shall at any time.
(a) enter into a contract in the name of or purporting to be made on behalf of the other party;

- (b) by any act pledge the credit of the other party of impose or attempt to impose any contractual obligations on the other party;
- (c) make any representation or give any warranty on behalf of the other party;
- (d) either in its own offices, factories or depots. or invoices, bill heads or letter paper of any other place or by any other means oral or written, make any statement to the effect or representation calculated or liable to induce others to believe that it is the agent of the other party.
17. Notwithstanding anything contained in this agreement it is hereby expressly agreed and declared:
- (a) WML shall be entitled to manufactured and/or buy the said products or any goods similar thereto from any other person whatsoever during the continuance of this Agreement or at any time thereafter;
- (b) WML shall be entitled to sell the said products to any person in any territory and in any manner whatsoever.
- (c) GSPL shall not be entitled to impose any restrictions or conditions on WML in that behalf.
18. This agreement shall commence on and from the date hereof and shall remain in force upto December 31, 2003 and shall be deemed to be automatically renewed for each succeeding period of a year unless, terminated by written notice given at least six month before December 31 next following either party signifies to the other, its intention to the contrary.
- Provided that either party shall be entitled to terminate this Agreement forthwith :
- (a) Upon the other making any arrangement or composition with its creditors or upon a winding up order passed against it or its going into liquidation or upon a Receiver being appointed of any of the properties of the other ; or
- (b) Upon the other committing a breach or default of any of the terms and conditions hereof.
- Provided that a notice in writing has been served upon the other specifying the breach or default complained of and requiring the other or remedy, within the period specified in the notice and other fails or neglects to remedy such breach of default within the said period.
19. Notwithstanding anything contained in this agreement and/or the expiry on termination of this Agreement for any reason whatsoever, all the obligations herein undertaken by GSPL with regard to the information, industrial property and secrecy shall remain in full force and effect for all time to come.
20. Upon the expiry or sooner termination of this Agreement for any reasons what so ever GSPL shall,
- (a) not make any use what oever of the information disclosed or communicated to them by WML hereunder or acquired by GSPL in connection with or as a result of the implementation of this Agreement.
- (b) forthwith return and deliver unto WML information and all documents relating thereto disclosed or communicated by WML to GSPL under this Agreement;
- (c) deliver to WML or such other party or parites as WML may designate in that behalf the entire quantity of the said products for which firm order has been placed by WML in terms or clause 10 or dispose of the same in such manner as terms of WML may specify : WML will pay for the products as per the last agreed price for the stock of the said products in taken by WML.
21. If at any time during validity of this Agreement either party is unable to perform whole or in part any obligation under this agreement because of war, hostility, military operation of any character, civil commotion, sabotage, quarantine restriction, act of God and acts of Govt. (including, but not restricted to act prohibition of exports or imports) fires, floods, explosions, epidemics, strikes or any labour trouble, embargoes, then epidemics, epidemics, strikes or any labour trouble, embargoes, then epidemics, strikes or any obligation/engagement shall be postponed during the time when such circumstances are operative. The party which is unable to fulfill its obligations under the present contract due to circumstances mentioned above, must within 15 days of occurrence of any of the causes,

- mentioned hereinabove in this clause, shall inform the other party of existence or termination of circumstances preventing the performance of the contract. Certificate issued by the Chamber of Commerce or any other competent authority connected with the cause shall be sufficient proof of the existence of the above circumstances and their duration.
22. This Agreement shall be deemed to represent the entire Agreement between the parties hereto regarding the subject matter hereof and shall supercede, cancel clause shall, inform the other party of existence or termination of circumstances preventing the performance of the contract. Certificate issued by the Chamber of Commerce or any other competent authority connected with the cause shall be sufficient proof of the existence of the above circumstances and their duration.
23. Any relaxation or concessions granted or shown by either of the parties under this Agreement shall not in any way prejudice or amount to waiver of right or remedies under this Agreement of at law.
24. Nothing contained herein shall be deemed to constitute a partnership between the parties herein.
25. **This Agreement is and shall be deemed to have been made and executed in New Delhi and all monies payable hereunder or pursuant hereto shall be paid in New Delhi.**
26. In the event of any Question of disputes arising under or out of or relating to the construction, meaning and operation or effect of this agreement or breach thereof, the matter in dispute shall be referred to the Arbitrators, one to be nominated by GSPL and the other to be nominated by the WML and in event of the said Arbitrators not agreeing the an Umpire to be appointed by the Arbitrators before proceeding with the reference. The decision of the Arbitrators or in the event of their not agreeing the decision of the Umpire shall be final and binding on the parties to contract. The provisions of the Indian Arbitration Act and the rules made there under shall apply to proceedings. The Arbitrators or the Umpire as the case may be shall be entitled, with the consent of the parties, to enlarge the time from time to time for making award. The Arbitrators/Umpire shall give a reasoned award. The venue of the Arbitration shall be New Delhi. The Courts at New Delhi alone shall have jurisdiction for the purpose of enforcement of the Award of the Arbitration and the matter relating to arbitration here under:
27. All notice required to be given or served by either party hereto on the other shall have been deemed to have given or served if the same shall have been delivered to, left at or sent by registered post acknowledgment due, by either party to the other at the registered office of the other provided that either party shall have the right to inform the other of any address of other address at which such notices shall be received by it, and the same shall be deemed to have been duly given or served as if the same shall have been delivered to, left at or sent by registered post with acknowledgment due to such party at such other address.
28. The agreement upon execution will supercede earlier Agreement dated 24th 1995 entered between the parties."
10. डब्ल्यू.एम.एल एवं दिल्ली स्थित पंजीकृत GSPL मुख्यालय के बीच में कतिपय दवाईयों की बिक्री के संबंध में किया गया अनुबंध (उपरोक्तनुसार) सम्पन्न हुआ था जिसके लिये GSPL मुख्यालय दिल्ली द्वारा अपीलार्थी व्यवहारी, जो राजस्थान के बहरोड स्थित औद्योगिक इकाई के रूप में जी.एस.पी.एल. की राजस्थान राज्य के भीतर इकाई है, से उक्त माल का निर्माण करवाया गया। बहरोड स्थित इकाई ने माल का निर्माण कर मुख्यालय के निर्देशानुसार निर्मित माल मुख्यालय/निर्देशित शाखाओं को स्थानान्तरित किया गया एवं तत्पश्चात GSPL मुख्यालय दिल्ली/निर्दिष्ट शाखाओं से क्रेता फर्म को तत्संबंधित राज्य में दवाईयों पर करदेयता के अनुरूप कर वसूल करते हुए क्रेता फर्म मैसर्स डब्ल्यू.एम.एल को माल की स्थानीय/अन्तर्प्रान्तीय बिक्री की। विद्वान अधिकृत अधिवक्ता अपीलार्थी ने उक्त संव्यवहारों के सम्बन्ध में दिल्ली स्थित पंजीकृत मुख्यालय के कर निर्धारण एवं अन्य डिपो/कमीशन एजेंट के

स्थानीय एवं केन्द्रीय बिक्री कर अधिनियम के तहत पारित कर निर्धारण आदेशों की प्रतियां भी प्रस्तुत की। राजस्थान राज्य की इकाई द्वारा माल के डिपों/ब्रांच स्थानान्तरण के समर्थन में "एफ" प्रपत्र प्रस्तुत किये। साथ ही चालान/इन्वॉयसेस, बिल्टी व माल के परिदान के संबंध में किये गये खर्चे कमीशन आदि के दस्तावेज इत्यादि भी प्रस्तुत किये एवं जिससे स्पष्ट है कि माल GSPL मुख्यालय/राजस्थान के बाहर की GSPL मुख्यालय की विभिन्न शाखाओं/ऐजेन्ट्स के माध्यम से माल क्रेता फर्म डब्ल्यू.एम.एल को विक्रय हुआ है।

11. उपरोक्त विक्रय करार, प्रस्तुत रिकार्ड व "एफ" प्रपत्रों के आलोक में क्या बहरोड स्थित GSPL अपीलार्थी इकाई द्वारा दिल्ली पंजीकृत मुख्यालय को माल का प्रेषण अन्तर्प्रान्तीय व्यवसाय के अनुक्रम में विक्रय अथवा डिपो/शाखा अन्तरण है इस संबंध में स्थिति को स्पष्ट करने के लिये केन्द्रीय विक्रय कर अधिनियम, 1956 (जिसको आगे "केन्द्रीय अधिनियम" कहा जायेगा) की धारा 6ए का पठन निम्न प्रकार से है :-

3. When in a sale or purchase of goods said to take place in the course of inter-State trade or commerce - A sale or purchase of goods shall be deemed to take place in the course of inter-State trade or commerce if the sale or purchase-

(a) occasions the movement of goods from one State to another; or

(b) is effected by a transfer of documents of title to the goods during their movement from one State to another.

Explanation 1 - Where goods are delivered to a carrier or other bailee for transmission, the movement of the goods shall, for the purpose of clause (b), be deemed to commence at the time of such delivery and terminate at the time when delivery is taken from such carrier or bailee.

Explanation 2 - Where the movement of goods commences and terminates in the same State it shall not be deemed to be a movement of goods from one State to another by reason merely of the fact that in the course of such movement the goods pass through the territory of any other State.

Section 6 A 1 [Burden of proof, etc. in case of transfer of goods claimed otherwise than by way of sale]

1- Where any dealer claims that he is not liable to pay tax under this Act, in respect of any goods, on the ground that the movement of such goods, from one State to another was occasioned by reason of transfer of place of his business or to his agent or principal, as the case may be and not by reason of sale, the burden of proving that the movement of those goods was so occasioned shall be on that dealer and for this purpose he may furnish to the assessing authority, within the prescribed time or within such further time as that authority may for sufficient cause, permit a declaration, duly filled and signed by the principal officer of the other place of business, or his agent or principal, as the case may be containing the prescribed particulars in the prescribed form obtained from the prescribed authority along with the evidence of dispatch of such goods 2[and if the dealer fails to furnish such declaration, then the movement of such goods shall be deemed for all purposes of this Act to have been occasioned as a result of sale.]

2. If the Assessing Authority is satisfied after making such inquiry as he may deem necessary that the particulars contained in the declaration furnished by a dealer under sub-section (1) are true, he may, at the time of or at any time before, the assessment of the tax payable by the dealer under this Act, make an order to that effect and there upon the movement of goods to which the declaration related shall be deemed for the purpose of this Act to have been occasioned otherwise than as a result of sale.

केन्द्रीय बिक्री कर (पंजीकरण एवं पण्यार्वत) नियम 1973 के नियम 16(बी) के तहत प्रपत्र "एफ" विहित किया गया है। अपीलार्थी व्यवहारी ने किये गये संव्यवहारों के संबंध में एफ प्रपत्र प्रस्तुत किये गये हैं जिसको कर निर्धारण अधिकारी ने किसी प्रकार मिथ्या अथवा बोगस नहीं माना

12. उपरोक्त के अलावा अपीलार्थी व्यवहारी के विद्वान अधिकृत प्रतिनिधि ने अपने कथन के समर्थन में दिये गये उद्धरणों का उल्लेख भी आवश्यक है, जो कमशः निम्नप्रकार से है :-

i). STATE OF TAMIL NADU VS THE CEMENT DISTRIBUTORS (1975) 36 STC 389 (SC) March 14, 1975

".....It is apparent that there was no movement of goods by the respondent company as a result of a contract of sale between the respondent and the buyer at Calcutta. The shipment was made by the respondent-company without any reference to any buyer. The movement of goods from Madras to Calcutta did not take place as a result of any contract of sale, but in pursuance of instruction contained in authorisation for transfer of stocks from Madras to Calcutta. The transactions were not inter-State sales liable to tax under the Central Sales Tax Act. The movement of goods from one State to another without any of the elements of "sale" within the meaning of the Central Act cannot be subject to tax. The shipment was movement of stocks of cement belonging to the State Trading Corporation from one place to another. There was shortage of supply of cement at Calcutta. The State Trading Corporation moved stocks from Madras to Calcutta. The area of need and the availability of stocks of cement were known to the State Trading Corporation. The transactions could not be subjected to Central sales Tax."

ii) KELVINATOR OF INDIA LTD. VS THE STATE OF HARYANA 1973 (1973) 32 STC 629 (SC) August 23, 1973

"The refrigerators manufactured by the company were transferred to its sales office and godowns at 19A, Alipore Road, Delhi-6, under despatch notes. Necessary entries in the stock register showing receipt were made in the stock register maintained by the company in the godowns and sales office at Delhi. The issue entries were also made in such registers. The payments such as freight, octroi, transit insurance and other expenses, i.e, up to the stage of sale and delivery of goods to the respective distributors at the sales office at Delhi were borne by the company. The purchasers, namely, the distributors placed their specific orders at various times at Delhi upon examining and finding the suitability of the machines in pursuance of which the refrigerators were delivered against receipt on delivery challans. Bills were raised by the sales office at Delhi and consideration was also received by it."

It has further been found by the High Court that the appellant had asserted the following facts and the assertion of the appellant was neither rejected by the departmental authorities nor was it dealt with in the respective orders:

1. That after the goods are manufactured in the factory an excise clearance pass is obtained after payment of excise duty for the transport of goods from the factory to the company's godown in Delhi. The excise pass is always for movement of goods in favour of self.
2. That during the transport of the goods from Faridabad to Delhi, the octroi at the barrier is paid by the company.
3. That at destination the goods are received by company's staff and taken in their godown.
4. That in pursuance of the said orders Delhi staff give delivery of the goods at Delhi to the customer under a challan prepared at Delhi.
5. That thereafter the bill is raised from Delhi and the price of the goods is received by the company at Delhi and deposited in company's account in its Delhi bank.
6. That all that the assessee does is to manufacture refrigerators and they are branded for the purpose of sale and distribution.

Assuming that the distribution agreements constituted contracts of sale, it would still have to be shown that the sale by the appellant to the distributors occasioned the movement of refrigerators from Faridabad to Delhi. In this respect we find that according to the facts found by the Tribunal, the appellant has a godown and sales office in Delhi. There is nothing to show that the appellant has also a godown in Faridabad. The movement of refrigerators from Faridabad to the appellant's godown in Delhi in the circumstances can well be ascribed to the fact that the appellant has a godown facility in Delhi. There were two places at which in the nature of things the appellant could have sold the refrigerators to the distributors. It could be either at Faridabad where the appellant has its factory wherein the refrigerators are manufactured or in Delhi where the appellant has its sales office and godown and where also the three distributors have their offices. The selection of place of sale depended upon mutual agreement between the parties. It is also obvious that if there is a choice before the parties of so arranging their matters that in one case they would have to incur liability to pay tax and in the other case the liability to pay tax would not be attracted, they would prefer the latter course. There is nothing illegal or impermissible to a party so arranging its affairs that the liability to pay tax would not be attracted or that the brunt of taxation would be reduced to the minimum. The appellant company in the present case would incur no liability to pay tax under the Act if it were to transport the refrigerators from its factory in Faridabad to its own office and godown in Delhi and thereafter to sell them to the distributors. The liability to pay tax under the Act would however, arise if the sale of the refrigerators to distributors were to take place at Faridabad and the movement of refrigerators from Faridabad to Delhi were to take place under the contract of sale. The question with which we are concerned is whether the appellant entered into such an arrangement with the distributors that the liability to pay tax would be attracted and not the other arrangement under which no such liability could be fastened on the appellant. So far as this question is concerned, we find that the parties expressly stated in each of the three distribution agreements that it would be in Delhi that the sale of refrigerators would take place to the distributors and the property therein would pass to them. It was again in Delhi that the refrigerators were delivered to the distributors. The orders for the refrigerators were placed by the distributors in Delhi and it was also here that the price of refrigerators was paid. Looking to all the facts of the case, we have no doubt that the arrangement between the parties was that refrigerators would be sold by the appellant to the distributors after they had been transported to the sales office and godown of the appellant on Alipore Road, Delhi, so that no liability to pay tax under the Act would arise. It cannot, in the circumstances, be said that the transport of the refrigerators from Faridabad to Delhi was in pursuance of contracts of sale between the appellant and the distributors."

iii) BALABHAGAS HULASCHAND VS THE STATE OF ORISSA 1975 (1976 37 STC 207) (SC) December 9, 1975

"Case No II - A, who is a dealer in State X, agrees to sell goods to but he books the goods from State X to State Y in his own name and his agent in State Y receives the goods on behalf of A. Thereafter the goods are delivered to B in State Y and if B accepts them a sale takes place. It will be seen that in this case the movement of goods is neither in pursuance of the agreement to sell nor is the movement occasioned by the sale. The seller himself takes the goods to State Y and sells the goods there. This is, therefore, purely an internal sale which takes place in state Y and falls beyond the purview of section 3(a) of the Central Sales Tax Act not being an inter State sale."

- iv) [1980 U.P.T.C.-317] R.M. Shai, J. Sales Tax Reference No. 931 of 1978 Dated January 10, 1980 Commissioner of Sales Tax Vs Ms John Okey & Mohan Ltd.

"4. The learned Standing Counsel relied on Union of India Vs Ms K.G. Khosla and Co.(P) Ltd., 197) U.P. Tax Cases 751 and urged that Supreme court in this decision has watered down its views on inter State sale and the transactions as are in dispute are now covered under Section 3(a). The argument is based on complete misapprehension of facts in Khosla's case. It was found that goods were manufactured in pursuance of specific orders in respect of which contract was entered in Delhi and goods were forwarded to respective customers at whose instance goods were manufactured. The delivery through depots was for convenience only. The Supreme court itself distinguished between manufacture in general course of business and on specific order. This case therefore cannot be an authority in respect of manufacture in general course of business nor it can be taken to have watered down its earlier decisions.

5. The learned counsel then argued that at least transfer to Bombay cannot be exempted and relied on correspondence between assessee and its sole selling agent at Bombay and urged that goods having moved in pursuance of supply orders mentioned in letter of the Selling Agent it is clear that goods moved out of State in pursuance of those orders which had been placed with agent and forwarded to assessee. The argument as presented appears attractive but facts found are otherwise. These letters were scrutinized and it has been found that supply orders refer to order of agent and not to any order placed by customers. On this finding again the movement cannot be said to be in pursuance of an agreement to sale."

- v) [In The High court of Andhra Pradesh At Hyderabad] State of A.P. Vs Gromor Chemicals Pvt. Ltd. March 21, 1990 Vol. 79 STC page 42

"We therefore, hold that the inferences of law on the proved facts by the Tribunal, are correct and the finding that there is no inter-State sale when the goods are moved from Patancheru, Hyderabad to Calcutta to its office and that the movement of goods is not in pursuant to any contract to its sale entered into by the Patancheru office, that in fact there is no contract of sale but only a transfer of the stock from Hyderabad to the assessee's branch at Calcutta which has godown facility and the goods moved were never earmarked for Dey's Medical Stores. Calcutta and could be sold to anybody."

- vi) 2016 VAT Reopoter page 261 SB Sales Tax Revision No. 298/2011

ACCT, Bhiwadi Vs Alfa Woven Labels (India) Pvt. Ltd. Dated 13.04.2016

"The undisputed fact emerge is that direct delivery of the goods on transfer by the factory of the respondent at Bhiwadi, was never taken by the ultimate buyer, outside the State. There is no evidence on record or gathered by the Revenue authorities at the time of survey even or thereafter to establish connection or relation of the ultimate buyer of the goods outside the State with the dispatch of the goods by the factory of the respondent at Bhiwadi. In my view, the goods in question did not move out of the State in relation to any preexisting contract of sale between the respondent and ultimate buyer outside the State only a mere allegation that the respondent manufactured the goods as per the specification of some of the buyers, is not sufficient to convert th stock transfer into inter-State sales in the absence of any other material on record."

- vii) ASHOK LEYLAND LTD VS STATE OF TAMIL NADU (S.C.) January 7, 2004 (2004) STC 473

"34. The liability to tax on inter-State sale as contained in section 6 is expressly made subject to the other provisions contained in the Act. Sub-Section (2) of section 9, on the other hand, which is a procedural provision starts with the

words "subject to the other provisions of this Act and the rules made thereunder". Section 6-A provides for exception as regard the burden of proof in the event a claim is made that transfer of goods had taken place otherwise than by way of sale. Indisputably, the burden would be on the dealer to show that the movement of goods had occasioned into by reason of any transaction involving sale of goods had occasioned not by reason of any transaction involving sale of goods but by reason of transfer of such goods to any other place of his business or to his agent or principal, as the case may be. For the purpose of discharge of such burden of proof, the dealer is required to furnish to the assessing authority within the prescribed time a declaration duly filled and signed by the principal officer of the other place of business or his agent or principal. Such declaration would contain the prescribed particulars in the prescribed form obtained from the prescribed authority. Along with such declaration, the dealer is required to furnish the evidence of such dispatch of goods by reason of Act 20 of 2002. In the event, if it fails to furnish such declaration, by reason of legal fiction, such movement of goods would be deemed for all purpose of the said Act to have occasioned as a result of sale. Such declaration indisputably is to be filed in form F. The said form is to be filled in triplicate. The prescribed authority of the transferee State supplies the said form. The original of the said form is to be filed with the transferor State and the duplicate thereof is to be filed before the authorities of the transferee State whereas the counter-foil is to be preserved by the person where the agent or principal of the place of business of the company is situated.

35. When the dealer furnishes the original of form F to its assessing authority, an enquiry is required to be held. Such enquiry is held by the assessing authority himself. He may pass an order on such declaration before the assessment or along with the assessment. Once an order in terms of sub-section (2) of section 6-A of the Central Act is passed, the transactions involved therein would go out of the purview of the Central Act. In other words, in relation to such transactions, a finding is arrived at that they are not subjected to the provisions of the Central Sales Tax Act. It is not in dispute there under no appeal is provided thereagainst."

viii) माननीय उच्च न्यायालय ने अपने निर्णय (2016) पेज 261 ACCT, Bhiwadi Vs Alfa Woven Labels (India) Pvt. Ltd. में यह सिद्धान्त प्रतिपादित किया है :-

"Manufactured goods were sent from Biwadi factory to Head Office at Dehli. Mere allegation that the respondent manufactured the goods as per the specification of some of the buyers, is not sufficient to convert the stock transfer into inter-State sales in the absence of any other material on record. Since the goods in question did not move out of the State in relation to any pre-existing contract of sale between the respondent and ultimate buyer outside the State, the consignment of goods made by HO to the ultimate buyer outside the State can not be termed to be the Inter-State sales. "

ix) U.P.T.C] C.S.T U.P., Lucknow Vs Dey's Mdeical Stores Mfg. (P)Ltd. में यह सिद्धान्त प्रतिपादित किया है :-

"It may be that the opposite party in order that the brunt of taxation might be reduced to the minimum has opened depots at Calcutta and Patna, but there is nothing illegal or impermissible to a party to arrange its affairs in a manner that the liability to pay tax would not be attracted. The liability to tax under the Act would only arise if the movement of medicines from Allahfeabad to Calcutta/Patna were to take place under the contract of slae. The evidence derives us to a different conclusion. The orders for the purchase of medicines were placed by the Districbutors in Calcutta and it was also there that the price of medicines was paid

by the Distributors to the Company's Depots at Calcutta/Patna. The Company had by itself made the invoices in favour of their Depots at Calcutta/ Patna who on receipts of the consignment note were obtaining permits from the West Bengal Government under the West Bengal Sales Tax Rules. The excise duty and the transport charges were also paid by the Company and not by the Distributors. Looking to all the facts of the case we have no doubt that the arrangement between the parties was that medicines would be sold by the Company to the Distributors through their Depots after they had been transmitted to the Sale office of the Company at Calcutta so that no liability to pay tax under the Central Sales Tax Act would arise. It cannot in the circumstances be said that the transport of the medicines from Allahabad to Calcutta/Patna was in pursuance of contract of sale between the Company and the Distributors. I am fortified in the view which I take from the decision of the Supreme Court, in M/s Kelvinator of India Ltd. V. State of Haryana, AIR 1973 SC 2526."

13. विद्वान उप राजकीय अधिवक्ता का कथन है कि व्यवहारी द्वारा घोषित शाखा कार्यालय अमृतसर, साहिबाबाद एवं दिल्ली की जांच की गई। व्यवहारी द्वारा घोषित शाखा अन्तरण की सत्यता की जांच कराने के लिए स.वा.क.अ. श्री पन्ना लाल मेघवाल एवं वा.क.नि. श्री दीनदयाल गोयल को भेजा गया। अमृतसर शाखा की जांच में पाये गये तथ्य अन्य शाखाओं तथा GSPL मुख्यालय की जांच के लगभग समान हैं, निम्नप्रकार हैं :-

(1) व्यवहारी मैसर्स जी.एस.पी.एल. द्वारा घोषित शाखा मै. जी.एस.पी.एल. हाउस नं. 6, सेवा नगर पुतलीनगर जोन नं. 5 स्ट्रीट नं. 3, अमृतसर (पंजाब) राज्य में दिनांक 12.02.01 से पंजीकृत है जिसके LST/CST No. 6230915 है। घोषित शाखा स्थल पर दिनांक 10.11.13 को श्री राहुल भाटिया कर निरीक्षक सहायक आबकारी व कर कमिश्नर, अमृतसर 1 के साथ राजस्थान के स.वा.क.अ. व वा.क.नि. ने विजिट की। व्यवसाय स्थल मकान के एक 13" गुणा 11" के कमरे में है एवं इसके नीचे बेसमेन्ट को गोदाम के रूप में काम में लिया जाना बताया। मकान रिहायशी है जिसमें श्री राहुल सेठी का परिवार रहता है। श्री राहुल सेठी मै. जी.एस.पी.एल. की शाखा अमृतसर के अधिकृत हस्ताक्षरकर्ता है। विजिट के दिन Fresh salable माल का स्टॉक शून्य पाया गया। कम्पनी की शाखा के घोषित व्यवसाय स्थल का कोई किराया नहीं लिया जाता है। अमृतसर शाखा की जांच में पाये गये तथ्य निम्न प्रकार हैं :-

(1) मै. जी.एस.पी.एल. बहरोड से समस्त माल C&F के रूप में प्राप्त किया जाता है।

(2) मै. जी.एस.पी.एल. बहरोड से प्राप्त समस्त माल में WML को बेचा जाता है।

(3) क्रेता मै. WML अमृतसर द्वारा माल के पेटे भुगतान सीधे ही M/s G.S.P.L. दिल्ली को किया जाता है।

(4) भुगतान सम्बन्धी कोई कार्य C & F के रूप में श्रीमति रुचि सेठी द्वारा नहीं किया जाता है। श्रीमति रुचि सेठी एवं M/s G.S.P.L. का अमृतसर में कोई बैंक खाता नहीं है।

साहिबाबाद :-

M/s G.S.P.L. द्वारा साहिबाबाद की C&F Agent फर्म का नाम मैसर्स नेटेक्स मेडीकोन इण्डिया 4/22 साईट-4, साहिबाबाद है इसके अधिकृत हस्ताक्षरकर्ता श्री अनिल बंसल है। समस्त माल M/s G.S.P.L. बहरोड से F From के Agent में प्राप्त किया जाता है एवं प्राप्त समस्त माल को W.M.L. को ही बेचा जाता है। WML से बिक्री के बदले भुगतान सीधे ही M/s G.S.P.L. दिल्ली को किया जाता है।

नई दिल्ली :-

M/s G.S.P.L. द्वारा नई दिल्ली की C&F Agent फर्म का नाम मैसर्स गुप्ता जी ब्रदर्स, 79, प्रथम तल, अर्जुन नगर, नई दिल्ली है। केवल M/s G.S.P.L. का ही कार्य व्यापार किया जाता है। वर्तमान में कोई स्टॉक नहीं है। समस्त बिक्री M/s WIN.M.L को ही की जाती है। बिक्री पश्चात समस्त भुगतान H.Q. Delhi को M/s WIN.M.L द्वारा किया जाता है।

1. शाखाओं की जांच में पाया गया कि शाखाओं द्वारा समस्त माल मैसर्स M/s G.S.P.L. की बहरोड स्थित फैक्ट्री से प्रेषित माल प्राप्त किया जाता है। समस्त माल शाखा के द्वारा अन्ततोगत्वा क्रेता (Ultimate buyer) M/s W.M.L. को ही बेचा जाता है।
2. बिक्री पश्चात समस्त भुगतान M/s W.M.L. द्वारा सीधे ही कम्पनी M/s G.S.P.L. के दिल्ली स्थित H.O. को किया जाता है। शाखा कार्यालय द्वारा विक्रय किये गये माल का भुगतान प्राप्त नहीं किया जाता है।

प्रकरण में व्यवहारी द्वारा विनिर्मित उत्पाद Betadine का ट्रेडमार्क "Trade & Merchandise Marks Act 1958" के अधीन ट्रेड मार्क का एकमात्र मैसर्स डब्ल्यू.एम.एल. है।

उपरोक्त सर्वे/जांच के निष्कर्ष से स्पष्ट है कि बहरोड स्थित अपीलार्थी G.S.P.L. द्वारा विवादित माल मुख्यालय/एजेन्ट्स/शाखाओं को प्रेषण G.S.P.L. मुख्यालय के निर्देशाधीन किया गया है एवं माल का Appropriation W.M.L को G.S.P.L. मुख्यालय/शाखा के स्थान पर ही हुआ है।

14. के.वि.क.अ. की धारा 6ए(1) के अधीन व्यवहारी द्वारा किया गया दावा कि वे इस अधिनियम के अधीन कर चुकाने हेतु दायी नहीं है क्योंकि माल को शाखाओं को अन्तरित किया गया है तथा इसकी बिक्री घोषणा प्रपत्र "एफ" के समर्थन से किया जाना कथन किया है। उपरोक्त तथ्य माननीय न्यायालयों द्वारा उपरोक्त उद्धरणों में दिये गये तथ्यों के अनुरूप ही है, अर्थात् कथित बिक्री GSPL मुख्यालय/शाखाओं द्वारा क्रेता फर्म से WML के मध्य सम्पन्न हुई है न कि अपीलार्थी GSPL बहरोड व क्रेता WML के मध्य हुई है। GSPL मुख्यालय नई दिल्ली व WML के मध्य किये गये अनुबंध के अवलोकन से भी स्पष्ट है कि :-

1. विक्रय अनुबंध राजस्थान राज्य के बाहर अलग से केन्द्रीय अधिनियम के तहत पंजीकृत व्यवहारियों के मध्य हुआ है न कि अपीलार्थी GSPL के क्रेता के मध्य हुआ है।
2. अनुबंध के पैरा 6 के अनुसार बिक्री उत्पादों की कीमत, मात्रा व पैकेज जो क्रेता द्वारा क्रीत किये जावेंगे एवं विक्रेता GSPL मुख्यालय द्वारा आपूर्ति समय-समय पर उनके द्वारा तय करने की सहमति है।
3. अनुबंध के पैरा 7 के अनुसार GSPL मुख्यालय द्वारा WML को बिक्रीत माल की कीमते परस्पर सहमति से तय की जायेगी जिसमें उत्पाद शुल्क, बिक्री कर, परिवहन, बीमा राशि, चुंगी एवं अन्य कर जो माल की सुपुर्दगी पर देय होंगे अलग से वसूल किये जायेगे अर्थात् माल की कीमत नई दिल्ली में ही तय होगी न कि अपीलार्थी GSPL बहरोड राजस्थान में।
4. अनुबंध के पैरा संख्या 11 के अनुसार GSPL मुख्यालय उपलब्ध एवं अस्तित्व में रहे स्टॉक की कीमत भी माल की डिलीवरी के समय तय की जायेगी। इसका तात्पर्य है कि अपीलार्थी GSPL राजस्थान के यहां से माल की कीमत तय नहीं होती है बल्कि इसकी कीमत GSPL मुख्यालय पर ही तय होती है।
5. GSPL मुख्यालय प्रत्येक मास का बिक्री विवरण जो माल डिलीवर किया गया है एवं WML द्वारा स्वीकार किया गया है के संबंध में उचित तरीके से रिकार्ड का संधारण करेंगे इसका तात्पर्य भी यह है कि माल की बिक्री का बिन्दु GSPL मुख्यालय है ना कि अपीलार्थी GSPL बहरोड राजस्थान।

15. विभाग की ओर से विद्वान उप राजकीय अभिभाषक द्वारा प्रस्तुत तथ्य एवं उद्धरण सर्वथा अलग है इन प्रकरणों में सामान्यतः मुख्यालय की ओर से माल क्रेता द्वारा अन्य राज्य में स्थित ब्रांच को आदेश प्राप्त होने पर दिये गये आदेश के अनुरूप माल की आपूर्ति मुख्यालय द्वारा ब्रांच के माध्यम से किये जाने को पूर्व विद्यमान अनुबंध के क्रम में माल का परिवहन होने से माननीय न्यायालयों का यह मत रहा कि माल का उक्त परिवहन डिपो/स्टॉक/ब्रांच ट्रांसफर ना होकर अन्तर्प्रान्तीय व्यवसाय के क्रम में बिक्री है परन्तु यहां पर तथ्य सर्वथा अलग है अतः प्रस्तुत उद्धरण वर्तमान प्रकरणों में राजस्व के सहायता नहीं करते हैं।

✓

✓

16. केन्द्रीय अधिनियम की धारा 3(ए) के तहत बिक्री सम्पूरित होने के लिये दो निम्न शर्तों की पूर्ति होना आवश्यक है जैसाकि माननीय मद्रास उच्च न्यायालय ने मैसर्स हकीम सैयद आबिद हुसैन एण्ड सन्स बनाम मद्रास सरकार (1968) 21 एसटीसी 350 में अभिनिर्धारित किया है :-

"(a) There must be a sale of goods. The word "sale" has been defined under section 2(g) of the CST Act.

(i) Parties must be competent to contract

(ii) mutual assent,

(iii) Transfer of property in the goods from the seller to the buyer, and

(iv) A price money paid or promised.

If these conditions are fulfilled, then completed sale takes place.

(b) Such completed sale should occasion the movement of goods from one State to another."

जबकि अपीलार्थी GSPL द्वारा परिवहनित माल मुख्यालय GSPL अथवा उसके द्वारा निर्दिष्ट डिपो/शाखा/एजेन्ट्स को है एवं प्रतिफल GSPL मुख्यालय द्वारा WML से प्राप्त किया गया है। यहां तक कि माल का Appropriating नई दिल्ली से GSPL मुख्यालय अथवा उके द्वारा निर्दिष्ट एजेन्ट्स/शाखा द्वारा जिस राज्य में स्थित है, में WML को हुआ है।

अपीलार्थी व्यवहारी ने विवादित संव्यवहारों के समर्थन में कि उक्त राजस्थान की इकाई से दिल्ली अथवा अन्य डिपो के बीच में माल का परिवहन विक्रय के अनुक्रम में न होकर डिपो/शाखा स्थानान्तरण है इसके समर्थन में निम्न दस्तावेज प्रस्तुत किये हैं :-

1. डिस्पेच नोट/इन्वॉयस जो राज्य के बहरोड से मुख्यालय दिल्ली/अन्य डिपो के बनाये गये हैं जिनमें स्टॉक ट्रांसफर किया जाना अंकित है एवं संव्यवहार एफ फार्म के विरुद्ध है एवं उसमें कर वसूल नहीं कर केन्द्रीय उत्पाद शुल्क के अन्तर्गत निर्धारित कीमत अंकित है।
2. बिल्टियां जो बहरोड से दिल्ली मुख्यालय व अन्य डिपो जो राज्य के बाहर स्थित हैं के लिये बनी हैं जिसमें किराया To Be Billed अंकित है।
3. राजस्थान बहरोड से प्रेषित माल में डिफेक्ट होने पर जी.एस.पी.एल. के डिपो द्वारा माल की वापसी से संबंधित दस्तावेज।
4. विभिन्न सी एण्ड एफ एजेन्ट्स को चुकाये गये कमीशन की विगत।
5. एफ फार्म विभिन्न राज्यों स्थित डिपो एवं दिल्ली स्थित मुख्यालय के कर निर्धारण आदेश।
6. किये गये विवादित संव्यवहारों से सम्बन्धित बीमा दस्तावेज।
7. बहरोड से जीएसपीएल के दिल्ली स्थित मुख्यालय एवं अन्य राज्यों में स्थित डिपो GSPL मुख्यालय द्वारा क्रेता को माल आपूर्ति के संबंध में तैयार की गई बिल्टियों की प्रति।
8. डिपो और मुख्यालय से माल वापसी से संबंधित दस्तावेज एवं मोडवेट क्लेम के दस्तावेज।
9. विभिन्न डिपो, मुख्यालय के संस्थागत खर्चों का हिसाब इत्यादि।
10. एक्साइज गेट पास जो स्वयं के नाम से है।
11. माल परिदान के फलस्वरूप प्रतिफल का भुगतान दिल्ली स्थित GSPL मुख्यालय को किये जाने के दस्तावेज।

अपीलार्थी से GSPL मुख्यालय को परिवहनित माल की डिलीवरी मुख्यालय के स्टाफ द्वारा लिये जाने सम्बन्धित दस्तावेज।

17. उपरोक्त न्यायिक उद्धरणों विद्वान अभिभाषक की बहस प्रस्तुत रिकार्ड के परिशीलन से प्रथम दृष्टया सुस्थापित होता है कि विवादित संव्यवहार अपीलार्थी GSPL द्वारा GSPL मुख्यालय को पूर्व विद्यमान अनुबंध के क्रम में नहीं किये गये हैं। अपीलार्थी व्यवहारी द्वारा प्रस्तुत रिकार्ड से भी हमारे समक्ष यह तथ्य प्रस्तुत किये गये हैं कि राजस्थान से माल का

संचरण नई दिल्ली स्थित मुख्यालय अथवा मुख्यालय से निर्देशित इसकी ब्रांच/एजेन्ट को हुआ है। मुख्यालय का स्टॉक रजिस्टर भी प्रस्तुत किया गया है। जिससे भी प्रथम दृष्टया यह भी स्पष्ट है कि माल की डिलीवरी मुख्यालय के स्टाफ द्वारा ली जाकर माल स्टॉक में लिया गया है एवं उक्त प्राप्त माल एक साथ ही क्रेता व्यवहारी को विक्रय नहीं किया गया है। बिल्टियां टू पे की बनाई हुई है एवं अनुबंध के अनुरूप स्थानीय कर व अन्य खर्चे इन्वॉयस में GSPL मुख्यालय द्वारा वसूल किये गये हैं तथापि चूंकि यह रिकार्ड से तथ्यों का मामला है अतः हमारी राय में यह उचित है कि प्रकरण कर निर्धारण अधिकारी को रिकार्ड की विस्तृत जांच कर निर्णय पारित करने हेतु प्रतिप्रेषित किया जावे।

18. तदनुरूप कर निर्धारण अधिकारी को निर्देश दिये जाते हैं कि वे रिकार्ड से जांच करे कि (i) अपीलार्थी की बहरोड स्थित इकाई से माल का परिवहन किया गया है उससे संबंधित बिल्टियों में परिवहन किराया एवं स्थानीय कर यथा चुंगी आदि का व्यय किसके द्वारा वहन किया गया है (ii) प्रेषित माल में डिफेक्ट होने पर माल वापसी के संबंध में हुए व्ययों का वहन किसके द्वारा किया गया है, (iii) विभिन्न सी एण्ड एफ एजेन्ट्स को की गई बिक्री के विरुद्ध कमीशन किसने चुकाया है। (iv) परिवहन के दौरान विवादित संव्यवहारों से संबंधित बीमा दस्तावेजों की जांच कर यह पता लगाये कि बीमा राशि का व्यय किसने वहन किया है। (v) विभिन्न डिपों एवं मुख्यालय के संस्थागत खर्चे किसके द्वारा वहनित किये गये हैं, (vi) निर्गत माल के एक्सार्ज गेट पास किसके नाम से हैं। (vii) परिवहित माल के संबंध में क्या अपीलार्थी व्यवहारी को प्रतिफल प्राप्त हुआ है? इसकी जांच भी करें। (viii) अपीलार्थी GSPL बहरोड के यहां से परिवहित माल की डिलीवरी किसके द्वारा ली गई है। (ix) क्या GSPL मुख्यालय एवं इसकी ब्रांचों द्वारा तैयार गये स्टॉक ट्रांसफर नोट/बिल्टी की क्रेता WML द्वारा डिलीवरी ली गई है अथवा ऐसे स्टॉक ट्रांसफर नोट/बिल्टी जो अपीलार्थी बहरोड इकाई द्वारा तैयार किये गये उनकी भी क्रेता WML द्वारा डिलीवरी ली गई है। (x) क्या कोई प्रस्तुत "एफ" फार्म बोगस अथवा मिथ्या पाया गया है।

19. प्रकरणों में कर निर्धारण अधिकारी द्वारा प्रत्येक विवादित संव्यवहार की जांच नहीं की गई है। प्रथम दृष्टया उक्त प्रकरण स्टॉक/ब्रांच/डिपों ट्रांसफर का प्रतीत होता है अतः कर निर्धारण अधिकारी के अपीलाधीन आदेश विवादित संव्यवहारों में सृजित मांग अपास्त की जाती है, परन्तु कर निर्धारण अधिकारी को प्रकरण प्रतिप्रेषित कर उपरोक्तानुसार निर्देश दिये जाते हैं कि वे दिये गये निर्देशों की प्रस्तुत रिकार्ड से जांच करें, यदि उक्त निर्देशों की पालना में की गई जांच के पश्चात निष्कर्ष में दिल्ली स्थित GSPL मुख्यालय की मुख्य भूमिका है, तो माल का संचरण अपीलार्थी GSPL द्वारा केन्द्रीय अधिनियम की धारा 6ए के अधीन स्टॉक/ब्रांच/डिपों स्थानान्तरण है जिसके सम्बन्ध में प्रस्तुत "एफ" प्रपत्रों की जांच कर स्वीकार किया जावे अन्यथा पारित आदेश यथावत रहेगा। अतः प्रस्तुत समस्त अपीलें स्वीकार करते हुए आरोपित मांगें अपास्त की जाती हैं एवं प्रकरण उपरोक्त निर्देशों के अधीन प्रतिप्रेषित किये जाते हैं।

निर्णय सुनाया गया।


22.5.2017
(मदन लाल)
सदस्य


(खेमराज)
अध्यक्ष